Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-IV Apr. 2016

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली

अर्शदीप सिंह
सहायक प्रवृता
डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर (पंजाब)

सारांश—

शिक्षा मानव विकास का अभिन्न अंग है। शिक्षा के माध्यम से विधार्थी का सम्पूर्ण विकास होता है और वह नई ऊंचाईयों की और अग्रसर होते हैं। पुरातन काल से ही शिक्षा अधिकतर अध्यापक केंन्द्रित रही है, अध्यापक ही विधार्थियों के लिए सभी क्रियाऐं आयोजित करते रहे हैं, विधार्थियों का मार्गदर्शन करते रहें हैं। इस विधि से विधार्थी को ज्ञान तो प्राप्त हो जाता है किंतु वह ज्ञान का स्वयं अनुभव नहीं कर पाते। विघार्थियों का सम्पूर्ण विकास, तभी हो सकता है जब शिक्षा विधार्थी केंन्द्रित हो, उनकी रूचियों, योग्यता का ध्यान रखा जाए। जिस प्रणाली में विधार्थी को अपनी गति, इच्छा से पढने का अवसर प्रदान किया जाए। वही प्रणाली विधार्थीयों के लिए उचित कही जा सकती है। वर्तमान में जो अंक प्रणाली शिक्षा में अपनाई जा रही है, उस प्रणाली में विधार्थी स्वतंत्रता से कार्य न कर मात्र अंको की दौड में लगे रहतें हैं। अंक प्रणाली विधार्थी केंन्द्रित न होकर अध्यापक केंद्रित है। इन्हीं कमियों को दूर करने के लिए यू.जी.सी. (UGC) ने उच्च शिक्षा में चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली लागू करने का सुझाव दिया है। यह प्रणाली पुर्ण रूप से विधार्थी केंद्रित है और विधार्थियों को विषथ चुनाव की स्वंतत्रता प्रदान करती है। वर्तमान शोध पत्र में चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली (CHOICE BASED CREDIT SYSTEM) के उद्देश्य, उपयोगिता का अध्ययन किया गया है।

चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली की अवश्यकता क्यों—

वर्तमान समय में शिक्षा को विधार्थी केंद्रित करने पर बल दिया जा रहा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली कई खामियों के कारण अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में असफल रही है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (NKC) ने वर्तमान शिक्षा में निम्न कमियों को उजागर किया है—

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अध्यापक केन्द्रीय अधिक है। शिक्षा का पाठ्यक्रम क्रियाएं समय अध्यापक को ध्यान को, रख निर्धारित किया जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को समूह कार्य, व्यक्तिगत कार्य क्षेत्र कार्य, समुदाय से मेल—जोल का कोई अवसर प्रदान नहीं किया जाता। विद्यार्थी एक पूर्व निर्धारित रीतियों के उपर चलते रहते है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को अंतर—अनुशासनात्मक गतिशीलता की स्वतंत्रता नही है अर्थात् वह एक विषय से दूसरे विषय को सम्बंधित कर नही पढ़ सकता — वर्तमान शिक्षा में विद्यार्थियों के लिए एक अलगाव से भरपूर माहौल की सृजना की जा रही है। उसको बहु—अनुशासनात्मक उपागम का कोई अवसर प्रदान नही किया जाता। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को विषय चुनाव की स्वतंत्रता प्राप्त नही है। किसी भी कोर्स में दाखिला लेने के उपरांत उनको उस कोर्स में निर्धारित विषयों को ही पड़ना पड़ता है। वह अपने रूचि के अनुरूप अलग से दूसरे विषयों का चुनाव नही कर पाते। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी एक समय में एक ही विषय का अध्ययन कर सकता है। यहां एक ही कोर्स से बंधा हुआ रहता है। वह अपने कोर्स के अतिरिक्त दूसरे कोर्स के विषयों का अध्ययन कर अलग से सर्टीफिकेट

प्राप्त नही कर सकता। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम में नए ज्ञान, नई धारनाओं को शामिल करने के ओर खास ध्यान नहीं दिया जाता अर्थात पाठ्यक्रम में बदलाव बहुत कम होता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में किसी भी कोर्स के अधिगम उद्धेश्यों एवमं इकाई के अधिगम उद्येश्यों को स्पष्ट नही किया गया होता जिस कारण विद्यार्थी का उदेश्यों की स्पष्टता नही रहती।

चुनाव आधारित क्रेडिट् प्रणाली क्या है—

चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली शिक्षात्मक कार्यक्रम के तत्वो को क्रेडिट के साथ जोड़कर अंकित करने का क्रमबद्ध ढंग है। यह शिक्षा के क्षेत्र में नई प्रणाली है। इसमें अंको को क्रेडिट्स में बदल दिया जाता है। उच्च शिक्षा में क्रेडिट्स की परिभाषा अलग—अलग मापदण्डों के उपर निर्धारित होती है। विद्यार्थियों को क्रेडिट्स कई बार उनके कार्य—भार को देखते हुए प्रदान किए जाते है। कई बार क्रेडिट् देते समय उनके अधिगम परिणामों को ध्यान में रखा जाता है। कई बार विद्यार्थियों की घंटो में उपस्थिति मापकर एवं कई बार उनकी सृजनात्मक, खोज को जांचकर उनको क्रेडिट प्रदान किए जाते हैं। इस प्रणाली में विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुरूप विषयों का चुनाव करते है। उन्हें क्रेडिट् प्रदान किए जाते है। विद्यार्थी अपनी योग्यता के अनुसार निर्धारित क्रेडिट् सीमा से अधिक क्रेडिट प्राप्त कर सकता है। विद्यार्थियों को विषय सूची प्रदान की जाती है और उनमें से क्रेडिट् को देखते हुए अपनी योग्यता, रूचि के अनुरूप विषयों को चुन लेते है। चुनाव आधारित क्रेडिट् प्रणाली के मुख्य विशेषताएं इस प्रकार है—

इस प्रणाली में विद्यार्थियों को अपनी पसंद के कोर्स, विषयों के चुनाव की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। इस प्रणाली में विद्यार्थियों को तीन प्राकर के कोर्स प्रदान किए जाते है— केंद्रींय (Core), वैकल्पिक (Elective), मूल (Foundation). क्रेन्द्रीय विषयों में वह विषय होते हैं जो कि विद्यार्थी को पढ़ने आवश्यक होते है। वैकल्पिक विषयों में विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुरूप चुनाव कर सकता है। इस प्रकार के विषय क्रेन्द्रिय विषयों का समर्थन करते है। इस प्रकार के विषय क्षेत्र का विस्तार करते है, विद्यार्थी के कौशल का विकास करते है। मूल विषयों में आगे आवश्यक विषय और वैकल्पिक विषय होते है। आवश्यक विषय ज्ञान में वृद्धि करते है और वैकल्पिक विषयों में मूल्य आधारित शिक्षा पर बल दिया जाता है। इस प्रणली में विद्यार्थी अपनी गति से सीखते है। विद्यार्थियों के उपर कोर्स को समय सीमा में पूर्ण करने का कोई दबाव नहीं होता। यह प्रणाली धीमे गति से सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए लाभदायिक साबित होती है। इस प्रणाली में विद्यार्थी अपने कोर्स के अतिरिक्त अन्य कोर्स को भी पढ़ सकते है। उनके उपर मात्र अपने विषयों को पड़ने की पाबंदी नही होती। इस प्रणाली में विद्यार्थी निर्धारित सीमा से अतिरिक्त क्रेडिट भी प्राप्त कर सकता है। यह उसकी योग्यता के उपर निर्भर करता है कि वह एक समय में कितने क्रेडिट प्राप्त कर सके। यह प्रणाली अधिगम में अंतर अनुशासनात्मक उपागम अपनाती है। विद्यार्थी अपने विषय से अतिरिक्त दूसरे बिल्कुल अलग तरह के विषयो को पड़ सकता है जैसे कि वह विज्ञान और भाषा के विषय साथ—साथ में पड़ सकते है। चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली शिक्षण प्रक्रिया को परंपरागत अध्यापक क्रेन्दिय शिक्षा से विद्यार्थी—केन्द्रीय शिक्षा की ओर ले जाती है क्योंकि इस प्रणाली में विद्यार्थियों को अधिक स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त यह प्रणाली विद्यार्थी को गतिशीलता प्रदान करती है।

इस प्रणाली में कोर्स को समेस्टरों (Semesters) में बांटा जाता है— इस प्रणाली में विद्यार्थियों का मूल्यांकन निरंतर व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से किया जाता है। विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते समय विद्यार्थियों की कक्षा में उपस्थिति, कार्य—सौपणी में प्रदर्शन, परीक्षाओं में प्रदर्शन को ध्यान में रखा जाता है। इस प्रणाली में विद्यार्थियों को अंकों के स्थान पर ग्रेड प्रदान किए जाते है।

विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों को ग्रेड अक्षरों में बदल दिया जाता है। इस प्रणाली में अंत में ग्रेड के आधार पर विद्यार्थियों को क्रेडिट प्रदान किए जाते है।

चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली की उपयोगिता—

यह प्रणाली अंक प्रणाली से अधिक प्रभावशाली एवं उपयोगी है। इस प्रणाली में अधिक समय शिक्षण पर खर्च न कर सीखाने पर व्यतीत किया जाता है अर्थात इस प्रणाली को अध्यापक केन्द्रीय न रह कर विद्यार्थी केन्द्रीय कहा जाता जा सकता है। विद्यार्थी—क्रेन्द्रीय शिक्षा ही आज के समय में उपयोगी साबित होती है। इस प्रणाली में विद्यार्थी को हर प्रकार की क्रिया करवाई जाती हैं। वह केवल अपना समय भाषण सुनने या सैमीनार में हिस्सा लेने में व्यतीत न कर समूहिक विचार—विमर्श, व्यक्तिगत कार्य, कार्य—सौपणी, कार्यशाला आदि क्रियाओं में भी भाग लेता है। इस प्रकार प्रणाली में विद्यार्थी के अधिगम अनुभवों को मापने योग्य ईकाईयों में एकतृत्र किया जाता है। जिसके फलस्वरूप को विद्यार्थी को अकादमिक पुरस्कारों के लिए चुनवा आसान हो जाता है। इस प्रणाली में विद्यार्थियों को अधिक लचकीली प्रणाली प्रदान की जाती है। उन्हें अपनी योग्यता, रूचि के अनुरूप कार्यक्रम, अंतर—अनुशासनात्मक कोर्स चुनने की स्वतंत्रता होती है। इस प्रणाली में विद्यार्थी की स्वतंत्रता, प्रभूसत्ता का सम्मान किया जाता है। उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप, अपनी योग्यता, रूचि के अनुकूल विषय चुनाव की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। यह प्रणाली विद्यार्थी को अपनी गति से सीखने पर बल देती है। इस प्रणाली में तेज गति से सीखने वाले विद्यार्थी एक ही समय अधिक कोर्सों को पढ़कर अतिरिक्त क्रेडिट प्राप्त कर सकते है। वही धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थियों के उपर कोर्स किसी निर्धारित सीमा में पूर्ण करने का दबाव नहीं होता। इस प्रणाली में विद्यार्थी एक समय में जितने चाहे कोर्स पढ़ सकता है। अगर वह समेस्टर में किसी कोर्स में फेल हो जाता है तो उसे दुबारा से कोर्स को दोहराने की आवश्यकता नही पड़ती, वह किसी दूसरे कोर्स का चुनाव कर सकते है और अध्ययन को जारी रख सकते है। यह प्रणाली शिक्षा के क्षेत्र को व्याप्त बनाती है। विद्यार्थी एक ही समय में अलग—अलग प्रकार के विषयों को पड़ सकता है। उदाहरण के तौर पर एक विज्ञान पड़ने वाला विद्यार्थी साथ ही किसी भाषा का अध्ययन भी कर रहा हो। चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली में विद्यार्थी द्वारा किसी संस्था में अर्जित किए गए क्रेडिट को किसी दूसरे संस्थान में स्थानातरिंत किया जा सकता है। यह प्रणाली विभिन्न शिक्षात्मक ढाचों में अधिक पारद्रर्शिता एवं अनुकूलता लाने में लाभदायक करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

सीमाएं—

चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणली विद्यार्थी क्रेन्द्रित होने के कारण उत्तम मानी जा रही है। किन्तु इस प्रणाली के लागू करने से पहले कुछ प्रश्नों का हल करना आवश्यक होगा।

१. क्या विद्यार्थीयों को अलग—अलग विभागों में रहे कोर्सों को चुनने की सम्पूर्ण स्वतंत्रता होगी?
२. क्या विद्यार्थी को अपनी संस्था के बाहर दूसरी संस्था के कोर्स को भी चुनने की स्वतंत्रता होगी?
३. इस प्रणाली के अंतर्गत कोर्सों का ढ़ाचां किस प्रकार का होगा?
४. कोर्स में विद्यार्थियों के प्रदर्शन को कैसे स्पष्ट किया जाएगा।
५. विद्यार्थियों के समेस्टर के दौरान प्रदर्शन को कैसे स्पष्ट किया जाएगा।
६. विद्यार्थियों को क्रेडिट प्राप्ति में कोर्स के चुनाव में कितनी स्पष्टता होगी?
७. इस प्रणाली में अध्यापक, सहायक अध्यापकों की क्या भूमिका होगी?
८. इस प्रणाली में आई. सी. टी. (I.C.T) की क्या भूमिका होगी?

निष्कर्ष–

चुनाव आधारित क्रेडिट् प्रणाली विद्यार्थी केन्द्रीय प्रणाली है। इस में विद्यार्थी को विषय के चुनाव की स्वतंत्रता होती है। इसमें विद्यार्थी अपनी गति से सीखते है। इस प्रणाली में विद्यार्थियों को समूहिक कार्य, प्रोजेक्ट कार्य करने का अवसर प्रधान किया जाता है। यह प्रणाली एक लचकीली प्रणाली है जो कि विद्यार्थी के भीतर कौशलों का विकास करती है क्योकिं इस प्रणाली में सभी क्रियाएं पर बल दिया जाता है। इसमें विद्यार्थियों के प्रदर्शन को अंकों में न दर्शाकर उनके प्रदर्शन को सम्पूर्ण तौर पर मूल्यांकित करते हुए ग्रेडिंग के माध्यम से उनके नतीजे को स्पष्ट किया जाता है। इस प्रणाली में न केवल मूल्यांकन को निरंतर बनाया जाता है बल्कि सीखने की प्रक्रिया को भी निरंतर बना दिया जाता है। इस प्रणाली में विद्यार्थियों की समस्याओं, योग्यताओं को उभारा जा सकता है।

References

- R.K. Wanchoo, Implementation of Choice Based Credit and Grading System for UG/PG Programs: Salient Featyres A ppt, UCIET, Panjab University Chandigarh
- http://www.nith.ac.in/UG_RP_new.pdf
- http://www.uni-mysore.ac.in/assets/Downloads-
- 20012/January/CBCS-HANDBOOK-2012-13-Batch.pdf